

चनुष्य (wie eben) 1) adj. a) der Sehkraft zuträglich, den Augen heilsam TRIK. 3, 3, 311. H. an. 3, 487. fg. MED. j. 81. MBh. 13, 3423. Suçr. 1, 76, 17. 133, 10. 176, 9. 177, 20. शीतेन शिरसः स्नानं चनुष्यमिति निर्दिशेत् 2, 141, 3. ऋ० 1, 182, 20. 183, 6. — b) für's Auge angenehm, lieblich anzusehen, = सुभा TRIK. 3, 3, 311. 1, 13. H. 448. H. an. चनुष्या = सुभा MED. चनुष्यः श्रुतो भवति य एवं वेद KHAND. UP. 3, 13, 8. धिया भाग्यानुगामिन्या चेष्टमानो नयोचितम् । श्रुतसर्वस्य चनुष्यः स तु RĀGA-TAR. 3, 493. — 2) m. a) eine Art Kollyrium H. an. — b) N. versch. Pflanzen: Pandanus odoratissimus (केतक) MED. = कनक (st. केतक) H. an. = पुण्डरीक H. an. MED. Hyperanthera Moringa Vahl. (शोभाञ्जन) RĀGAN. im ÇKDr. — 3, f. आ a) eine Art Kollyrium (कुलत्तिका) AK. 2, 9, 103. H. 1062. H. an. MED. — b) N. verschiedener Pflanzen: Pandanus odoratissimus TRIK. 3, 3, 311. Glycine labialis Ltn. (श्रृणयकुलत्तिका) und Odina pin-nata (अनारुद्रा) RĀGAN. im ÇKDr. — 4) n. a) = खर्परीतुल्य und सौवी-राञ्जन zwei Arten von Kollyrium ebend. — b) N. eines kleinen Strauchs (s. प्रपिण्डरीक) ebend. RATNAM. 273.

चनुस् (von चनु) Uṇ. 2, 115. Vop. 26, 68. 1) adj. sehend: भास्वन्तं चनुषे चनुषे मयः RV. 10, 37, 8. भुवश्चतुर्मुखं कृतस्य गोपाः 8, 5. श्रुती इव चनुषा पातमर्वाक् 2, 39, 5. त्वं विश्वस्य जगत्तुर्निर्द्वांसि चनुषः das Auge des Sehenden 10, 102, 12. सूर्यश्चतुर्षामधिपतिः AV. 5, 24, 9. सं हि सूर्योपागतं समु सर्वेण चनुषा 10, 10, 15. — 2) m. N. pr. eines Marut's HARIV. 11545. eines Rshi (mit dem patron. मानव; s. चानुष) Ind. St. 1, 196. 3, 216. eines Sohnes des Anu Buḡ. P. 9, 23, 1. — 3) f. N. pr. eines Flusses Buḡ. P. 5, 17, 6. 7. Vgl. चनु, मुचनुस्. — 4) n. a) Helle, Licht: सूर्यस्य चनुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः RV. 5, 59, 5. 6, 11, 5. 7, 66, 16. 9, 10, 8. 1, 164, 4. der Morgenröthe: चनुरुर्वया वि भाति 92, 9. SV. 1, 4, 1, 2. 1. देवानां चनुः सुभा वदन्ती 7, 77, 3. — b) das Sehen: चनुषे मा प्रतरे तार्यते ब्रसे मा ब्रदंष्टि वर्धन्तु Sehen so v. a. Leben AV. 18, 3, 10. Anblick: नूचन्तं-श्चनुषे रन्ध्रैर्नम RV. 10, 87, 8. — c) Sehkraft, Gesicht; Blick, Auge (AK. 2, 6, 3, 44. H. 575): (काणवाय) चनुः प्रत्येधत्तम् RV. 1, 118, 7. 10, 87, 12. सूर्यं चनुरुच्छ्रुतु वातमात्मा 16, 3. AIT. Br. 2, 6. प्राणाः मनः, चनुः, बलम् AV. 5, 30, 13. आत्मा, चनुः, श्रुतः 6, 53, 2. TS. 2, 3, 9, 1. नसोः प्राणा उज्येश्चनुः 5, 5, 9, 2. ÇAT. Br. 10, 5, 3, 16. 14, 4, 1, 5. चतुरायुश्चैव प्रकीयते, प्रवर्धते M. 4, 41, 42. चनुरुत्तमम् 229. Suçr. 1, 133, 5. एतद् वै मनुष्येषु सत्यं निहितं य-च्चनुः AIT. Br. 1, 6. पश्यन्ति सर्वे चनुषा न सर्वे मनसा विदुः AV. 10, 8, 14. दुर्दृष्टश्चनुषो घोरात् 4, 9, 6. MBh. 6, 5757. 7, 315. यच्चनुषा मनसा यच्च वा-चोपास्मि AV. 6, 96, 3. 14, 2, 35. RV. 3, 37, 2. 6, 9, 6. die Sonne Mitra-Varuṇa's Auge 7, 61, 1. VS. 2, 16. 4, 32. 3, 34. ÇAT. Br. 1, 3, 1, 27. 6, 3, 38. 4, 2, 1, 28. 14, 2, 1, 5. मुञ्जन्ती प्रभा राज्ञो चनूषि च मनोसि च N. 5, 7. पार्थस्य चनुरुर्वया सक्तम् INDR. 4, 1. कृत्स्नसरे ददच्चनुस्त्वयि च ÇAK. 6. MBh. 3, 102. चनुर्दृष्ट्वा च मा तस्मै HARIV. 10062. यस्मिन्नेवाधिकं चनुरो-पयति पार्थिवः PAÑKAT. I, 273. सुहृञ्जने पतन्ति चनूषि ÇAK. 156. मैत्रेयो-तस्व चनुषा R. 1, 32, 17. 2, 92, 7. चनुरुन्मीलितं येन ÇIKSHĀ 59. चनुषो M. 2, 90. प्रसार्य चनुषो MĀKḢ. 33, 17. पोशुना चनुषी पूरयिवा 18. RAGH. 3, 17. काणोन चनुषा HIT. Pr. 11. दिव्य Buḡ. P. 4, 4, 18. घ्राणचनुस् adj. sich der Nase statt des Auges bedienend, blind MBh. 8, 3443. पितृदेवमनुष्या-णां वेदश्चनुः सनातनम् M. 12, 94. सर्वं तु समवेत्येदं निखिलं ज्ञानचनुषा M. 2, 8. 4, 24. ध्यानं R. 1, 9, 64. ज्ञायतो नयचनुषा R. 1, 7, 11. धर्मचनुस् adj.

der ein Auge für das Rechte hat R. 2, 111, 22. नयचनुस् adj. RAGH. 1, 55. प्रजापतेश्चनुः oder चनुःसाम N. eines Sāman Ind. St. 3, 216. — d) = च-नुर्वकन RATNAM. 71. — Vgl. ऋ०, अघोरं, विद्यतश्चनुस्, क्रुदे०.

चनुकर (चनुस् + कर), करोति Vop. 7, 84.

चनूरीग (चनुस् + रोग) m. Augenkrankheit Verz. d. B. H. No. 963 (चनु०).

चघ्, चघ्नोति tödten Dhātup. 27, 26.

चङ्कुषा m. N. pr. eines Mannes RĀGA-TAR. 4, 211. 215. 246. fgg.

चङ्कुर Uṇ. 1, 38. 1) m. Wagen Uṇ., Sch. H. an. 3, 553. MED. r. 154 (fälschlich चङ्कुर). n. Vehikel überh. TRIK. 2, 8, 48. — 2) m. Baum H. an. MED.

चङ्कमण (vom intens. von क्रम्) 1) adj. oxyt. herumgehend, sich Bewe-gung machend P. 3, 2, 150. — 2) n. das Herumgehen, Herumstreichen, Spazierengehen KĀN. 97. Suçr. 1, 69, 17. 362, 20. 2, 111, 5. 143, 2. PAÑKAT. 209, 1. Buḡ. P. 1, 10, 26. 3, 24, 50. 4, 31, 5. अचङ्कमणशील MĀRK. P. 16, 19.

चङ्कमा (wie eben) f. = चङ्कमण n.: मया herumschreitend KAUC. 31.

चङ्कायण PRavarādhj. in Verz. d. B. H. 38 wohl fehlerhaft für चा-क्रायण.

चङ्ग 1) adj. a) hübsch. — b) geschickt MED. g. 5. — 2) m. N. pr. eines Mannes RĀGA-TAR. 7, 87.

चचर in einem Liede, welches absichtlich mit dunkeln Wörtern be-dacht zu sein scheint: पतरेव चचरा चन्द्रनिर्णिक RV. 10, 106, 8.

चचेडा f. N. einer fruchttragenden Schlingpflanze, = वृक्षफल, वे-ष्मकूल, श्वेतराज्ञी, vulg. चिचिडा MADANAVIṆODA im ÇKDr.

चच्चपुट m. eine Art Tact H. 292. Sch. चच्चपुट ÇKDr. u. d. W. ताल und VIKR. ed. BOLL. S. 513. Vgl. चाचपुट.

चच्च, चच्चति Dhātup. 7, 8 (गती). hüpfen, springen: विलपति रुसति विषीदति चच्चति मुञ्चति तापम् Glt. 4, 8. (उत्सवः) चच्चदुचरचारणः Ka-thās. 22, 175. चच्चन्मनोऽज्ञफरी Rt. 3, 3. चच्चच्छिवा BHARTR. 3, 1. चच्चच्चि-ताग्नि Vet. 4, 20. उन्मदयानुधानतरुणीचच्चत्कारास्फालन PRAB. 3, 12. च-च्चत्पराग Glt. 1, 35. चच्चत् P. 5, 4, 3, Vārtt.

चच्च 1) m. Korb VJUTP. 137. — 2) f. आ a) Rohrwerk MED. k. 5. HĀR. 199 (lies: चच्चो). — b) Strohmänn MED. चच्चामित्रपः (sic) eine hübsche Puppe (vergleichsweise von einem Menschen) P. 1, 2, 52, Vārtt. 3, Sch. 5, 3, 98. Sch. 6, 1, 204. Sch. ÇANT. 2, 16.

चच्चत्क (von चच्चत्, partic. von चच्च) adj. hüpfend, springend P. 5, 4, 3. Vārtt.

चच्चरिन् m. oder चच्चरी f. Biene UDBHĀTA im ÇKDr. चच्चरीक m. dass. Uṇ. 4, 20. TRIK. 2, 5, 35. H. 1212.

चच्चरीकावली (च० + अवली) f. ein best. Metrum 4 Mal — — — — — COLEBR. Misc. Ess. II, 161 (VIII, 8). Hier ०रिकावली.

चञ्चल (vom intens. von चल्) 1) adj. f. आ sich hinundherbewegend, beweglich, unstät, wandelbar AK. 3, 2, 24. H. 1454. an. 3, 645. MED. I. 89. (शक्तिः) नागजिह्वेव चञ्चला MBh. 8, 3920. किशोराविव चञ्चलो HARIV. 3481. नारदः 3210. प्रधावनाञ्चलः Suçr. 1, 316, 7. मोनिः R. 1, 44, 23. च-ञ्चलापाङ्गी MBh. 7, 2142. दृष्टिः MĀKḢ. 48, 23. KĀURAP. 28. — AMAR. 99. Glt. 7, 16. Buḡ. P. 7, 8, 21. मत्तकरिकार्पचञ्चलो राग्यलक्ष्मीम् PAÑKAT. 204, 1. भोगाः — सौदामिनीचञ्चलाः BHARTR. 3, 36, 81. श्रीः MBh. 12, 8258. R.